नव सृजन का आधार

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

नव सृजन अर्थात नव निर्माण करना। बाह्य जगत पंचेन्द्रियों का जगत है। इस जगत को स्वर्ग के समान सुन्दर बनाना है। सभी मानव आनन्द का जीवन जी सकें इसके लिए नव निर्माण आवश्यक होता है। अन्दर का जगत आत्मा का जगत है। इसे भी अच्छा बनाना है। भीतर का जगत बाहर के जगत को खुराक देता है। बाहर का जगत भीतर के जगत का प्रतिबिम्ब है। मानव एक चिन्तनशील प्राणी है। इस जगत को सुन्दर बनाने में सबसे बड़ा योगदान मनुष्य का है। इसे कैसे अच्छा बनाया जाये यह चिन्तनीय बिन्दू है। अच्छा बनाने के लिए शान्ति, सह–अस्तित्व और प्रेम सबसे बड़ा आधार है। जिससे यह संसार अच्छा बन सकता है। सभी के साथ प्रेम से रहना चाहिए। सभी के साथ सहनशीलता दिखलानी चाहिए। यदि सहनशक्ति है तो किसी के साथ विवाद नहीं हो सकता। सहनशक्ति के न होने पर मारपीट, झगड़ा और विवाद होता रहता है। सहन करने से सभी समाधान मिल जाता है। त्याग में बहुत बड़ी शक्ति है। त्यागी व्यक्ति प्रणम्य होता है। जो सब कुछ त्यागकर सन्यासी बन जाता है वह सबका आराध्य होता है। परिवार, समाज और राष्ट्र में विवाद का सबसे बड़ा कारण त्याग का न होना है। यदि हर जगत समान वितरण रहें तो विवाद अपने आप शान्त हो जाये। भीतरी जगत को साफ–सुथरा बनाने के लिए मानव को अपने अस्तित्व को पहचानना चाहिए। आत्मा अजर–अमर अविनाशी है, यह अनन्त सुख का भण्डार है। शरीर नश्वर है आत्मा भिन्न और शरीर भिन्न है ऐसा ज्ञान होना चाहिए। नव सृजन के लिए जागरूकता बहुत आवश्यक है। जागरूक व्यक्ति अपने अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति सचेष्ट रहता है।

जागो ग्राहक जागो यह उद्घोष क्यों दिया जाता है? यह इसलिए दिया जाता है कि ग्राहक अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो जायें। जागो फिर एक बार यह नारा इसलिए दिया गया हैं कि व्यक्ति पुरुषार्थी बने। यदि वांछित फल न मिले तो उदास नहीं होना चाहिए। पुरुषार्थ बीज बोने का समय है। गेहूं की खेती करनी है तो गेहूं का बीज हमको बोना चाहिए। यदि धान की

खेती करनी है तो धान का बीज बोना चाहिए। पुरुषार्थ के द्वारा यह कार्य किया जाता है। बीज बोना हमारा कर्त्तव्य है उसका फल प्राप्त करना हमारे हाथ में नहीं है। आज के परिदृश्य में व्यक्ति की दिनचर्या ठीक नहीं है। खाने–पीने, सोने का कोई निश्चित समय नहीं रह गया है। दिनचर्या नियमित होनी चाहिए। चरैवेति–चरैवेति को अपना लक्ष्य बनाना चाहिए। अपनी चेतना को विकसित करना चाहिए। देश के हित में चिन्तन करना चाहिए। चेतना जागृत रहे और देश के विकास के लिए स्वतन्त्र चिन्तन करना चाहिए। जागने का अर्थ हैं चेतना का विकास। जब किसी देश के नागरिक जागृत हो जाते हैं तो देश का विकास होता है। यदि नागरिक सो जाते हैं तो देश का भाग्य सो जाता है। जीवन का जितना समय बचा है उसका सदुपयोग करना चाहिए। पुरुषार्थ सही दिशा में होना चाहिए। सही दिशा में किया गया पुरुषार्थ लक्ष्य की प्राप्ति करा देता है। महापुरुषों का कर्त्तव्य है देश के नागरिकों को जगाना, देश को सही मार्ग पर ले जाना। पुनरुत्थान कार्यक्रम पतन से उत्थान की और ले जाने वाला एक ऐसा कार्यक्रम है जो नागरिकों को सद्बोध देता है और राष्ट्रहित में चिन्तन करने के लिए प्रेरित करता है। जिस समय भारत परतन्त्र था उस समय देश के महापुरुषों, कवियों, लेखकों ने देश के नागरिकों को जगाने के लिए साहित्य को माध्यम बनाया। पण्डित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने ''जागो फिर एक बार'' कविता के माध्यम से देशवासियों को अंग्रेजों के विरुद्ध क्रान्ति करने के लिए प्रेरित किया। जिसका परिणाम यह रहा कि लोगों में चेतना की जागृति हुई और उन्होंने अंग्रेजी राज्य को उखाड़ फेंका। इसी प्रकार भारतेन्दु हरिशचन्द्र, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जैसे राष्ट्रवादी कवियों ने भारतीय चेतना को जगाने वाली कविता लिखकर अंग्रेजों को भागने के लिए मजबूर कर दिया। जागो फिर एक बार यह शीर्षक प्रेरणा देने वाला और मानव को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने वाला विषय है।

भारतीय संस्कृति का मूलपरक सूत्र है– नया सृजन करो। नव सृजन का अर्थ है चलते रहो, चलते रहो, प्रयत्न करते रहो। जल यदि एक स्थान पर स्थित रहता है तो उसमें बदबू आने लगती है परन्तु यदि जल बहता रहता है तो उसमें शुद्धता, निर्मलता और सुन्दरता बनी रहती है। प्रकृति हमें यह शिक्षा देती है कि सदैव आगे बढ़ते रहना चाहिए। एक चींटी दीवाल पर बार–बार चढती है और गिरती है किन्तु वह हार नहीं मानती। वह बराबर प्रयास करती रहती

है और दीवाल पर चढ़कर अपने मंजिल को प्राप्त कर लेती है। प्रयत्न करने से मनुष्य को पीछे नहीं हटना चाहिए। मुख्य रूप से यह सूत्र विद्यार्थियों पर अधिक लागू होता है। विद्यार्थी को अपने मंजिल को प्राप्त करने के लिए दूरदृष्टि और पक्का इरादा रखना चाहिए। असफलता से कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। असफलता को जीतने का प्रयास करना चाहिए। जो व्यक्ति हार मानकरके रुक जाता है उसका भाग्य भी वहीं रुक जाता है। संसार में जितने भी महापुरुष हुये हैं, उन्होंने यह सूत्र अपने जीवन में लागू किया। इसी का परिणाम है कि वे महान् कहलाये।